"महौजसो मानधना धनार्चिता धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्॥"

शब्दार्थ - महौजसः = अत्यन्त पराक्रमी (बलशाली)। मानधनाः = मनस्वी। धनार्चिताः = धन से सम्मानित। संयति = युद्ध में। लब्धकीर्तयः = यश पानेवाले। नसंहताः = न संगठित होकर। नभिन्नवृत्तयः = न भिन्न (अलग) मत रखनेवाले। धनुर्भृतः = धनुर्धारी सैनिक। असुभिः = प्राणों से। तस्य = उस दुर्योधन का प्रियाणि = कल्याण। समीहितुम = करना। वाञ्छन्ति = चाहते हैं।

प्रसङ्ग - दुर्योधन के वीर सैनिक भी उसके लिए अपना सर्वस्व अर्पित करना चाहते हैं। महाकवि भारवि ~~ब~~ दुर्योधन के वीर सैनिकों के गुणों का वर्णन करते हैं -

हिन्दी अनुवाद - ~~अत्यन्त~~ अति बलशाली, मनस्वी, धनदान द्वारा सन्तुष्ट, युद्ध में प्रख्यात धनुर्धारी सैनिक जो स्वार्थसिद्धि के लिए परस्पर मिले हुए नहीं हैं। साथ ही आपस में विरोधी कार्य नहीं करते हैं; प्राणों से उस (सुयोधन) दुर्योधन के प्रियकार्य करने के लिए उद्यमरत हैं।

टिप्पणी / व्याकरणभाग

महौजसः = महत् ओजः येषां ते; बहुव्रीहि समासः।
मानधनाः = मान स्व धनं येषां ते; बहुव्रीहि समासः।
धनार्चिताः = धनेन अर्चिताः, तृतीयातत्पुरुष समासः।
संयति = सम् √यम् + क्तिन्, सप्तमी एकवचनम्।
लब्धकीर्तयः = लब्धा कीर्तिः यैः ते; बहुव्रीहि समासः।
धनुर्भृतः = धनुः बिभ्रतीति धनुर्भृतः, उपपदतत्पुरुष समासः।
समीहितुम् = सम् + √ईह् + तुमुन्।
वाञ्छन्ति = √वाञ्छ् + लट् लकारः, प्रथमपुरुषस्य बहुवचनम्।

30 मई

अलंकार – प्रस्तुत श्लोक में पहले तीन चरणों के वाक्यार्थ, चौथे चरण के वाक्यार्थ के हेतु के रूप में आते हैं; अतएव यहाँ (1) काव्यलिङ्ग अलंकार है। दुर्योधन के प्रियकार्य करने (प्रियाणि वाञ्छन्त्य के लिए उसके वीर सैनिक (महौजसो, मानचना) तत्पर तथा -सुखिः) उद्यमरत हैं।

(महौजसो, मानचना आदि)
यहाँ साभिप्राय विशेषणों का प्रयोग होने से
(2) परिकर अलंकार भी है।

इसके साथ-साथ दोनों अलंकारों के तिल तथा तण्डुल की भाँति स्पष्ट होने से यहाँ (3) संसृष्टि अलंकार है।